

Sunday Avyakt Murlī Revision Class

तन, मन, धन और सम्बन्ध का श्रेष्ठ सौदा

AM 11-04-2021 (Rev. 10.12.87)

By BK Dr Sachin Bhai Ji

Class Date : 11-04-2021

Venue- Meditation Hall,

Pandav Bhawan

ओम शान्ति। एक अत्यंत गंवार, अनपढ़ किसान किसी महात्मा से मिलता है, महात्मा से कहता है- कोई भगवान के नाम का ऐसा मंत्र दे दीजिये जिसे मैं दिन-रात कार्य करते हुए जपता रहूं, मुझे बाकी कुछ नहीं आता। शास्त्र समझ में नहीं आते, धर्म की बातें समझ नहीं आती, कोई एक आसान सा भगवान का नाम, मंत्र या ऐसा कुछ दे दो। महात्मा उसे देखते हैं और कहते हैं- ठीक है, मैं एक शब्द तुम्हें देता हूं, बस दिन-रात इसे रटते रहना। वह शब्द है अधमोचन, अध अर्थात् पाप, मोचन अर्थात् समाप्त करने वाला। वो ठहरा गांव का अनपढ़ व्यक्ति, याद करने की कोशिश करता है अधमोचन, अधमोचन, अधमोचन और जाते-जाते वो घमोचन, घमोचन, घमोचन हो जाता है और दूसरे दिन उठता है और अपनी खेती करने लगता है तब वो घमोचन शब्द परिवर्तित हो जाता है। कहीं देखता है झगड़ा हो रहा है और कोई कहता है कि इतना घमासान क्यों मचा रखा है, तब वो वह शब्द पकड़ लेता है। उसके जैसा ही था घमासान, घमासान, घमासान दिन-रात एक ही शब्द का रटन। भक्ति मार्ग की कहानी है, दिखाया है ऊपर विष्णु जी बैठे हैं, नारायण, उनको हंसी आती है, ये मेरा कैसा भक्त है? और मुझे किस नाम से पुकार रहा है? लक्ष्मी पूछती है आप क्यों हंस रहे हो? वो कहते हैं- धरती पर मेरा एक ऐसा भक्त आया है जो मुझे उस नाम से पुकार रहा है जो किसी भी शास्त्र में लिखा नहीं है घमासान, घमासान, घमासान पर याद वो मुझे ही कर रहा है। लक्ष्मी कहती है- मैं उसे देखना चाहती हूं, आतुर हूं। नारायण कहते हैं, चलो दोनों चलते हैं, वो दोनों धरती पर आते हैं नारायण कहता है- मैं इस गड्ढे में छिपकर बैठता हूं, तुम जाओ रूप बदलकर। तो वो पूछती है- उस किसान से ये घमासान, घमासान तुम किस का नाम ले रही हो? वो बिल्कुल ध्यान नहीं देता है क्योंकि जप टूट जायेगा। पहली बार वो पूछती है, दूसरी बार, चौथी बार, पांचवी बार, कई बार पूछती है पर वो बिल्कुल भी ध्यान नहीं देता, अपना बस जाप चालू है घमासान, घमासान, घमासान और जब पूछती ही रहती है तो वो कहता

है- जा तेरे पति का ही नाम ले रहा हूं। वो डरती है, इसने पहचान लिया जरूर, फिर वो पूछती है आखिर वो है कहां पर? फिर वो ध्यान नहीं देता, वो पूछती रहती है, पूछती रहती है, पूछती रहती है, वो बिल्कुल ध्यान नहीं देता है। वो अपना नामजप बस चालू है, उसका काम करते-करते और फिर जब ये पूछती ही रहती है वो कहता है- जाओ उस खड्डे में है, तू भी चली जा वहां। तब तो उसको पक्का हो जाता है कि इसने मुझे पहचान लिया और विष्णु जी से कहती है अब छुपने से कुछ फायदा नहीं है। आ जाओ निकलकर। तो दिखाया है भगवान बाहर आ रहे हैं और कहते हैं कि ऐसे ही जो मेरे भोले-भाले भक्त हैं वो ही मुझे प्रसन्न कर लेते हैं, जीत लेते हैं बाकी जो ज्यादा पढ़े-लिखे हैं, जो ज्यादा समझदार हैं, अपने तर्क से ही मुझसे दूर चले जाते हैं।

तो आज सुबह की अव्यक्त वाणी, भगवान को कौन पसंद आ गया? भोली सुरतिया, कौन पसंद आ गया? भोली-भोली सुरतिया पसंद आ गई उसको। जिन्हें संसार ने ठोकर मार दी उसको इसने क्या कर दिया? ठाकुर बना दिया। कौन किससे मिलने आया है? आज की मुरली रत्नागर बाप आये हैं, किससे मिलने? जिन्होंने श्रेष्ठ सौदा किया है, ऐसे श्रेष्ठ सौदागर बच्चों से मिलने आये हैं और कैसे है ये सौदागर बच्चे? बहुत ही भोले हैं, संसार ने उन्हें क्या समझा था? नासमझ, अनपढ़, गंवार। संसार ने उन्हें क्या समझ के रखा था? असंभव है कि ये परमात्म प्राप्ति कर लें। अति गरीब, नाउम्मीदवार। ऐसे जो अति गरीब हैं उसमें भी सबसे गरीब किसको कहा आज? माताओं से गरीब, मातायें पर्स में माल छिपाया हुआ है तो जिन्हें संसार ने हमेशा छोटा समझा, कम समझा, इनफीरियर (Inferior) समझा उन्हें भगवान ने आकर क्या कर दिया? सिर का ताज बना दिया। एक प्रश्न आप सभी से, इतिहास में ऐसा कौन सा मोड़ आया जो स्त्रियों को कम समझा जाने लगा? कभी किसी ने सोचा है इसके ऊपर? सतयुग त्रेता में तो ये नहीं था। ये ईगलितेरियन सोसाइटी (Egalitarian Society) जिसको कहते हैं, समानाधिकारवाद। सतयुग-त्रेता में स्त्री, पुरुष से कम नहीं थी तो ये चालू कब हुआ? क्यों हुआ? और कैसे हुआ? यह एक चिन्तन का विषय है। क्यों हुआ होगा? अभी-अभी सोच के बताओ, द्वापर की शुरूआत ... क्या हो गया ऐसा कि अभी तक स्त्री-पुरुष समान थे, सतयुग-त्रेता अंत तक और अचानक स्त्रियां कम होने लगी, कम लेखी जाने लगी? यहां तक कि महान विचारक अरस्तू, बुद्धिमान पाश्चात्य जगत का सम्पूर्ण मनोविज्ञान कहो या फिलोसाफी (Philosophy) कहो या दर्शनशास्त्र कहो, केवल तीन व्यक्तियों के आधार पर है। सुकरात, उसका शिष्य प्लेटो और उसका शिष्य अरस्तू, ये तीन व्यक्ति हैं जो सबसे बुद्धिमान माने जाते हैं। उनके ही लेखन के द्वारा फिलासफी (Philosophy) से वेस्टर्न फिलासाफी (Western Philosophy) का जन्म हुआ। तो ऐसा अरस्तू, उसने भी

अपनी किताब, महान किताब पालीटिक्स (Politics) में लिखा है कि स्त्रियों के 32 दांत नहीं होते, कम होते हैं जबकि उसकी दो पत्नियां थी, वो मिसेस (Mrs) अरस्तू 1 और मिसेस (Mrs) अरस्तू 2, कभी भी देखकर गिन सकता था पर उसने भी कम माना। कुछ-कुछ धर्मों ने तो यहाँ तक कहा है कि स्त्री शरीर में मुक्ति संभव ही नहीं है, स्त्रियों को क्या करना होगा? पुरुष का जन्म लेना पड़ेगा तभी मुक्ति हो सकती है। तो ये ऐसा सब क्यों हुआ सारे समाज में? कि ऐसा क्या हो गया कि स्त्रियां कम लेखी जाने लगी, इनफीरियर (Inferior) हो गई और पुरुष प्रधान ये समाज बन गया? क्या सतयुग, त्रेता में पुरुष प्रधान ये समाज था? नहीं, विवेक तो ऐसा नहीं कहता। फिर क्या हुआ? या क्या हुआ होगा? सत्य तो भगवान ही बता सकता है, परन्तु फिर भी पुरातत्व आर्कियोलॉजिकल फाइन्डिंग्स (Archaeological Findings), हिस्ट्री (History) के अध्ययन से कुछ बांटे सामने आती है, कौन सी? कृषि, एग्रीकल्चर (Agriculture), फार्मिंग (Farming)। कृषि की शुरूआत हुई, पहले हंटिंग (Hunting) शिकार, शिकार करने कौन जाता था? स्त्रियां नहीं, पुरुष। परन्तु उसमें शिकार कभी मिलता था, कभी नहीं मिलता था तो स्त्रियां भी कुछ-कुछ करके भोजन यहां वहां से ले आती थी। समानाधिकार तब भी था परन्तु एक मोड़ इतिहास में सृष्टि चक्र में आया जहां कृषि का जन्म हुआ। सतयुग त्रेता में फलों के बगीचे थे या वहां भी कोई हल लेकर जमीन जोतता था? विवेक तो ऐसा नहीं कहता। कृषि का जन्म हुआ और कृषि कौन करता था? पुरुष। शक्तिशाली थे, स्त्रियां घर बैठती थी, भोजन। और कृषि कहां होती थी? नदी के पास और नदी जिसकी जमीन उसकी, लड़ाईयां, लड़ाईयां किसने लड़ी? पुरुषों ने। शक्तिशाली कौन हुआ? पुरुष। स्त्रियां धीरे-धीरे-धीरे, कम-कम होती गई। ये दो मुख्य कारण बताये हैं बहुत सारी स्टडीस (Studies) में बहुत सारे विचारक हैं, ईस्टर्न (Eastern), वेस्टर्न (Western) आर्कियोलॉजिकल बुक्स (Archaeological Books) हैं, कैसा सारा इतिहास, जहां तक इतिहास की स्टडी (Study) हुई है। जेंडर बायस (Gender Bias) कहां से आया? कैसे आया? क्यों आया? कैसे एक शक्तिशाली हो गया, एक कमजोर रह गया। यह दो मुख्य कारण बताये हैं, हंटिंग (Hunting), हंटिंग (Hunting) इतना नहीं, एग्रीकल्चर (Agriculture), कि ये धीरे-धीरे समाज पुरुष प्रधान होता गया और स्त्रियां कम-कम होती गई। उनका दर्जा, और ये एक साथ नहीं हुआ, एकदम नहीं हुआ बहुत Slowly, Slowly, Slowly हुआ, कई साल लग गये तो आज की मुरली में बाबा ने क्या कहा? मुस्कुरा रहे हैं। जब वो मुस्कुराता है तो उसकी मुस्कुराहट के बहुत सारे अर्थ होते हैं। इतनी आसान नहीं है उसकी मुस्कुराहट, भगवान मुस्कुराता है, शायद वो देखता है जो कोई नहीं देख पाता। उसकी दृष्टि वो देख लेती है जो कोई समझ नहीं पाता क्योंकि वो इस चक्र के बाहर है। सब कुछ जानता है, ऐसा कुछ नहीं सृष्टि चक्र का जो

उससे छिपा है। उसकी पैनी नजर काल के आर-पार देख लेती है। भोली सुरतिया को देख रहा है। किसको देख रहा है? माताओं को देख रहा है, कन्याओं को देख रहा है, पाण्डवों को देख रहा है, विदेशियों को देख रहा है, नेपाल वालों को देख रहा है, इस जन्म को देख रहा है, सब कुछ देख रहा है और कई बार मुरलियों में बाबा ने यहां तक कहा है, जो सामने है उनको, केवल उनसे मिलने नहीं आते बाबा, भगवान का अवतरण हो रहा है इस वसुंधरा पर वो इतना सीमित इतना लिमिटेड कभी नहीं हो सकता, किसी हॉल में कुछ बैठे है और वही उससे मुलाकात कर रहे है। वो सूर्य है, उन किरणों को कोई बंधन नहीं, कोई बाधा नहीं सृष्टि पर फैलती है उसकी किरणें, वो समयातीत है, कालातीत है। तो बाबा ऐसे बच्चों से मिलने आया है जो सर्वश्रेष्ठ आसामी है, ऐसे बच्चों से मिलने आया है जो बहुत भोले है, संसार ने जिसको नासमझ समझा, नाउम्मीद समझा, असंभव समझा कि ये क्या पायेंगे परमात्मा को। मम्मा का उदाहरण दिया, क्या थी? निमित्त गरीब क्या बन गई ? कौन सी कन्या? धन की देवी, धन लक्ष्मी बन गई, जिनके सामने लोग धन की भीख मांगते है। मल्टी मिलियोनर (Multi-millionaire) पूजा करते है उनकी। हर व्यक्ति एक प्रोग्रामिंग (Programming) लेकर जन्म लेता है। भगवान जो कर रहा है वो डीप प्रोग्रामिंग (Deep Programming) कर रहा है, चेतना को ही चेंज कर रहा है। इस बात को अंदर ही अंदर, अंदर ही अंदर जब तक घोटते नहीं रहेंगे, वो फीलिंग आयेगी नहीं, क्योंकि ये संसार, ये समाज हमें बचपन से बहुत सारी चीजें सिखाता है, उसके आधार पर, सामाजिक मान्यताओं के आधार पर हमारी विचारधारा बनी हुई है। हमने कई बार सुना है कि ये मूर्तियां जिनकी ये देवियां हम है, पर क्या वास्तव में इस बात को हमने अंदर स्वीकार किया है? शायद नहीं। भगवान कह रहा है कि ये तुम हो, तो आज की मुरली एक शब्द के इर्द-गिर्द है- सौदा। किसने सौदा किया? किसके साथ सौदा किया? कब किया? कैसे किया? विधि क्या है? कितना समय लगा? किन-किन बातों का सौदा किया? और क्यों किया? संसार में भी सौदा किया जाता है। सौदा अर्थात् क्या? सौदा शब्द का क्या अर्थ है? डील (Deal), सौदा अर्थात् खरीद-फरोख्त, लेन-देन, क्रय-विक्रय, आदान-प्रदान। सौदा, एक देगा एक लेगा, ऐसा सौदा और भगवान से मनुष्यों ने बहुत सौदे किये ,करते ही आया है तुम ये कर दो तो मैं ये कर दूंगा।

जैसे दिखाया है एक व्यक्ति ने देखा खजूर का पेड़ है, बहुत ऊंचा, चढ़ने लगा बीच में चढ़ा फिर अब हिम्मत डगमगाने लगी एकदम से भगवान की याद आ गई, हे प्रभु! खजूर तक पहुंचा दे, एक नगद रूपये चढाऊंगा। और ऊपर, और ऊपर, और ऊपर, बस अब खजूर सामने ही है। ऊपर कहता है- ये तो तुम भी जानते हो, भगवान से कह रहा है कि एक रूपये खजूर के लिये बहुत ज्यादा होता है। फिर खजूर पर हाथ ही

रख दिया और फिर भगवान से कहने लगा चढ़े हम और चढ़ावा तुम पर और उतने में पैर फिसला और धड़ाम से नीचा गिरा। उठा, कपड़े झाड़े, ऊपर देखकर कहने लगा ये भी कोई बात हुई, मजाक भी नहीं समझता। अगर गिराया नहीं होता तो चढ़ाने ही वाला था नगद, कलदार।

सौदे तो हम करते ही आये है परन्तु स्वार्थ भरे सब। तो आज की मुरली में सौदा किसने किया? हम बच्चों ने किया। किसके साथ किया? परमात्मा के साथ किया, रत्नाकर बाप के साथ किया। कब किया? संगमयुग पर किया, अब किया और किसी युग में यह सौदा नहीं हो सकता, ये ईश्वरीय सौदा है। विधि क्या है? एक ही शब्द - बाबा। समय कितना है? एक सेकण्ड और किन-किन बातों का सौदा किया? तन का, मन का, धन का और सम्बन्ध का। ये चार चीजें उसको दे दी और उसने क्या दे दिया? ऐसा शरीर जो सदा स्वस्थ हो, कितने जन्मों का सौदा है ये? अनेक जन्मों का। गैरन्टी कितने साल की है? अनेक जन्मों की। तन का सौदा। क्या मिला? तन स्वस्थ, मन खुश, धन अखुट और सम्बन्ध निस्वार्थ प्रेम। तन, तीन चीजें करनी है तन के साथ, मन के साथ तीन चीजें करनी है, धन के साथ तीन चीजें और सम्बन्धों के साथ तीन चीजें अभी संगम पर, तब कहीं जाकर ऐसा तन मिलेगा जो निरंतर स्वस्थ है, ऐसा मन मिलेगा जो निरंतर खुश है, ऐसा धन जो कभी भी, अखुट होगा वो और ऐसे संबंध जो निस्वार्थ। अभी के सम्बन्धों ने क्या कर दिया तुम्हारा? दिल के टुकड़े हजार कोई यहां गिरा कोई वहां, मकड़ी का जाल उस दिन मुरली में था, प्रपंच, संसार के प्रपंच में फंसा दिया, टुकड़े-टुकड़े कर दिये और बाबा ने क्या किया? वो सारे टुकड़े जोड़ दिये। तो सबसे पहला काम करना है आज की मुरली के आधार से तन पर।

1. तन में तीन बातें:

(i) शरीर को निरोगी रखना

(ii) शरीर के द्वारा विकर्म नहीं होने देना और

(iii) शरीर को सेवा में लगा देना

ये तीन काम है जो संगम पर इस शरीर के साथ करने है। पहला, देह क्या हो? स्वस्थ हो क्योंकि जब-जब शरीर में बीमारी आती है, सब कुछ नष्ट हो जाता है, उमंग उत्साह खत्म हो जाता है। समय, पीड़ा, दर्द, कमजोरी और वर्तमान समय तो सारा संसार कमजोरी के सागर में डूबा हुआ है। बीमारी है बहुत छोटी और उसके साथ आने वाली कमजोरी और भय भयावह है। बहुत ज्यादा है, पॉजीटिव (Positive) नाम सुनते ही कमजोरी पकड़ लेती है, बीमारी तो बहुत ही कम। एक साइकोलॉजिकल ट्रामा (Psychological Trauma) से ही गुजरना पडता है जैसे पेशेंट (Patient) को, खाने को दौड़ता है कमरा, समझ नहीं आता है

क्या करूं, क्या नहीं। लोग रोज अनुभव सुनाते हैं। साइकोलॉजिकल ट्रामा (Psychological Trauma), जब निकलते क्वारंटाइन (Quarantine) से बाहर क्योंकि ऐसा एकांत और ऐसा आज तक रहे नहीं थे। बहुत पीड़ा होती है, सारी दिनचर्या इधर-उधर हो जाती है, अस्त-व्यस्त हो जाती है, बीमारी में डिपेंडेंट (Dependent) हो जाता है व्यक्ति। संगम पर यदि अच्छा पुरूषार्थ करना है तो क्या चाहिए? अच्छा स्वस्थ शरीर, निरोगी काया, ऊर्जा जिसमें हो, शक्ति जिसमें हो। कहीं कोई दर्द नहीं, कहीं कोई पीड़ा नहीं, ऐसा एक वाइब्रेंट बॉडी (Vibrant Body), एक ऐसा शरीर और उसके लिये इस शरीर में हम क्या डाल रहे हैं ये बहुत महत्वपूर्ण है। क्या इसमें भेज रहे हैं अंदर? जितना ये ऊर्जावान होगा, जितनी प्राण ऊर्जा इसमें होगी उतना ये शक्तिशाली होगा, जितनी प्राणशक्ति कम होगी उतना वो कम शक्तिशाली होगा। प्राण आत्मा के बारे में बात नहीं कर रहे, न ही परमात्मा के बारे में। प्राण, जो सृष्टि में व्याप्त है, प्राणः, जीव ऊर्जा जिसको कहते हैं। एनर्जी बॉडी (Energy Body), जो एनर्जी के तलों पर जीते हैं वो स्वस्थ रहते हैं। जो शरीर के तल पर जीता है, ये खाऊं, वो खाऊं, ये कमी हो गई, वो कमी हो गई, अभी ये खाता हूं, अभी वो खाता हूं, अभी ये छोड़ता हूं, अभी वो छोड़ता हूं, इसमें ज्यादा है, उसमें कम है, इसमें न्यूट्रिएंट (Nutrient) है, इसमें प्रोटीन (Protein) है, ये एक तल है शरीर का जीने का। एक दूसरा तल है जिसे कहते प्राणिक लेवल (Pranic Level), जहां आप कनेक्ट (Connect) हो जाते हो इस सृष्टि में जो कॉस्मिक (Cosmic) ऊर्जा है, कॉस्मिक पार्टिकल्स (Cosmic Particals) है, ऑर्गॉन (Orgon), उसके साथ। ये भी एक कंडिशनिंग (Conditioning) है कि ये लो, वो लो तो ठीक रहोगे ये समाज ने कंडिशनिंग (Conditioning) कर दी है। धीरे-धीरे इस शरीर के तल से जैसे ही चेतना ऊपर उठती है, अन्नमयी कोष से मनोमयी, प्राणमयी कोष की तरफ तो ये विश्वास दृढ़ होने लगता है कि मेरा देह ऊर्जा से चल रहा है, शक्ति से चल रहा है, प्रकृति की ऊर्जा से चल रहा है।

चार ही शक्तियां हैं जो हमें चला सकती हैं। आत्मा, अगर किसी को इतना विश्वास आ जाये केवल आत्मा की शक्ति से मैं चलूंगा, अपने आप चलने लगेगा, फिर उसे किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, परन्तु वो विश्वास वो प्रोग्रामिंग (Programming) बहुत आंतरिक लेवल पर होनी चाहिए, सब कॉन्शस लेवल (Subconscious Level) पर। दूसरा - परमात्मा, तीसरा - ब्रह्म तत्व छठा तत्व, चौथा - चर-अचर सृष्टि जिसमें प्राण ऊर्जा दौड़ रही है।

जो इस तल पर जीते हैं उनका सब कुछ बदल जाता है। भोजन से सम्बन्ध कम है, किसी और चीज से सम्बन्ध है। ऊर्जा का तल है वो, मैं ऊर्जा पर जी रहा हूं, ऊर्जा शरीर में प्रवेश कर रही है, एक-एक अंग में ऊर्जा भरी हुई है, रोग कहां से आयेगा? रोग आ ही नहीं सकता। सारी दुनिया रोगी हो जाये पर हमें कुछ नहीं

होगा। ऐसा ऊर्जा का प्रवाह भीतर में है। तो सबसे पहला तल है शरीर का तल, उसमें शरीर को निरोग रखना, स्वस्थ रखना, ऊर्जावान रखना शक्तिशाली रखना, फ्लेक्सिबल (Flexible) रखना। उसमें वो सब डालना जो कि स्वस्थप्रद हो, वो सब उसमें डालना ही नहीं जो कि रोग कारक है, ये पहला। दूसरा, शरीर से कोई विकर्म न हो। ये सौदा है संगम का इस देह से, इन इंद्रियों से कोई विकर्म न हो, साकार में आता है, संकल्प में आ गया ठीक है, चला जायेगा, शरीर के तल पर न आये, कर्मों के तल पर न आये।

महात्मा बुद्ध के जीवनकाल में एक अनपढ़ महिला थी विमला नाम की, जिसे बहुत ही कम समझ में आता था, बुद्धि बहुत डल थी, अनपढ़, गंवार, अंगूठा छाप, वो भी आ गई। वो उन भिक्षुओं के बीच जो कि बहुत परिष्कृत पढ़े लिखे थे, बहुत अध्ययन जिन्होंने किया, साधनारत थे और कुछ ही दिनों में ये देखा गया कि ये महिला जिसको कुछ समझ नहीं आता है, बोलना भी नहीं आता है, जो सिखा रहा है, शिक्षायें दी जा रही वो भी उसे समझ नहीं आता है, वो अचानक एकदम अरिहंत बन गई, इनलाइटेंड (Enlightened). अचानक वो ही अवस्था को प्राप्त हो गई जिसको बुद्ध ने पाया। सब आश्चर्य हो गये, अरे! तुमने क्या कर दिया? तुमने ऐसा क्या किया? कौन सा पुरुषार्थ किया? वो कहती मुझे कुछ नहीं पता, मुझे तो ये भी नहीं पता ये अरिहंत क्या होता है। मैंने तो बस इतना ही स्वीकार कर लिया जो महात्मा बुद्ध कह रहे हैं कि जो कुछ उत्पन्न हो रहा है मन में, अपने को उससे अलग कर दो और देखो ये विचार मैं नहीं, ये भावनायें मैं नहीं, ये कल्पनायें मैं नहीं, ये पुरानी यादें मैं नहीं, इसको साक्षी होकर दूर से केवल देखती हूं, आते हैं चले जाते हैं, नश्वर है, थोड़े देर रहते हैं चले जाते हैं, थोड़े देर रहते हैं, चले जाते हैं। किसी से भी आइडेंटिफाइ (Identify) नहीं। बस इतना ही किया मैंने, कुछ भी नहीं किया मैंने, वो करते-करते ही वो डिटैच (Detach) हो गई और ऐसा वैराग्य उसमें जन्म ले लिया कि सारी निर्विकारिता उसमें आ गई। सारे अंतरमन के, सबकांशियस माइंड (Subconscious Mind) के सारे विकार उसके धुल गये। छोटे-छोटे अभ्यास करते करते। विचार आते हैं, विकारों के भी विचार आयेंगे, निर्विकार भी विचार आयेंगे, अच्छे विचार, बुरे विचार। अच्छे आते हैं तो हम उनको पकड़ लेते हैं, बुरे आते हैं तो हम झगड़ा करते, लड़ाई करते। एक दूसरी विधि है दोनों को देखना क्योंकि दोनों का ही स्वभाव अनित्य है। आया चला जायेगा, आया चला जायेगा। इन चार चीजों से अपने आपको अलग कर देना, मैं इधर हूं, विचार आया चला जायेगा, भावना उठी खत्म हो जायेगी, कोई पुरानी याद आई पकड़ के नहीं बैठ जाना, चली जायेगी, वो उसका स्वभाव ही है चला जाना। राइजिंग एंड पासिंग अवे (Rising And Passing Away), राइजिंग एंड पासिंग अवे (Rising And Passing Away), उत्पात और लय, कल्पना आई मन में, कोई विकार की कल्पना पकड़ लेते हैं छूट नहीं पाते उससे, उसका स्वभाव भी

वही है, चली जायेगी वो। इन चारों को ही साक्षी होकर देखना, इस देह को साक्षी होकर देखना, इस संसार के भी अनित्य स्वरूप का, अनित्य बोध जगा रहे निरंतर, जो कुछ हो रहा है कुछ भी स्थिर नहीं है, आज ऐसा है कल बदल जायेगा। सब बदल रहा है सब कुछ बदल रहा है, निरंतर अंदर ही अंदर यही अभ्यास। तो इस शरीर से कोई विकर्म न हो, कोई पाप न हो। पाप पहले मन में आता है फिर शरीर के तल पर आता है। मन में आते ही अलग कर देना है ताकि वो शरीर तक पहुंचे भी न, ये दूसरा। तीसरा, इस शरीर को क्या करना है? यज्ञ सेवा में लगा देना है, हड्डी-हड्डी सेवा में लगा देना है। जब ऐसे तीन काम इस संगम पर होंगे तो क्या मिलेगा? ये श्रेष्ठ सौदा होगा, बड़े आसामी हो बाबा ने कहा तुम, तुम किससे भी बड़े हो? वो जो संसार के लोग है बिजनेसमेन उनसे भी बड़े हो, उनको तो धन कमाने से ज्यादा बचाने में उलझे हुये है, एक तरफ भक्त है, एक तरफ वो है, एक तरफ दूसरे व्यवसाय वाले, तीनों से भी तुम बड़े हो क्योंकि सब उलझे हुए है। भक्ति मार्ग वाले भक्ति में उलझे हुये है, बहुत कठिन बना दिया है सब कुछ, उल्टा-सीधा कर दिया है। तो इस शरीर को स्वस्थ रखना है, स्वास्थ्य की खोज करनी है और हरेक की यह खोज अपनी है। किसी किताब से नहीं मिलेगी, किसी डॉक्टर से नहीं मिलेगी कि क्या खाने से और क्या पीने से मुझमें अदम्य शक्ति रहती है, कहां रहने से श्वास की गति कितनी है? कैसी है? काम करना पड़ेगा इस पर, स्वास्थ्य कहीं से भी खरीदा नहीं जा सकता। खोज है वो। दूसरा, शरीर से क्या करना है? कोई भी विकर्म न हो। तीसरा, यज्ञ में लगा देना है। तो शरीर के तल पर ये तीन उसके बाद है, मन।

2. मन में तीन बातें

(i) पहला मन को निर्विकारी रखना है। जो कुछ हो रहा है उसमें समझना मैं मन नहीं हूं, मन अलग। जैसे अब तक अभ्यास किया शरीर मैं नहीं हूं, मैं आत्मा हूं, वैसे मन भी मैं नहीं हूं, मैं आत्मा हूं। बाबा कहते है आत्मा कौन है? राजा। मन कौन है? मन मंत्री है, मतलब वो अलग है। उस मन में जो कुछ हो रहा है, कल्पनायें उठ रही है, इच्छायें उत्पन्न हो रही है, स्मृतियां जाग रही है या विचार आ रहे है, ये चारों ही मैं नहीं हूं, मैं अलग हूं, साक्षी। ये अभ्यास, जैसे शरीर मैं नहीं हूं वैसे मन भी मैं नहीं हूं। बहुत धोखा देता है ये मन भी, उससे भी अपने आपको अलग करना है। जैसे ही उन विचारों से अलग हो जाते है अपने आप आत्मिक स्वरूप में आत्मा स्थित होती है, आनंद की स्थिति में, तो सबसे पहला काम - निर्विकारी कर देना।

(ii) दूसरा - प्रभु प्रेम से भर देना

(iii) तीसरा - वैराग्य से भर देना- इस संसार के प्रति कहीं पर भी आसक्त न हो, निरंतर देखते रहना खुली आंखों से संसार में क्या-क्या हो रहा है? सब जगह पर कैसे भयभीत है लोग? डरे हुए है, सहमे हुए से है, क्या चल रहा है? कहां आसक्त हूं? किसमें आसक्त हूं? और क्या मिलेगा इस आसक्ति से? बेहोशी है जैसे, सारे सोये पड़े है, जागृति कहीं पर भी नहीं है। तो मन में निरंतर वैराग्य का चिन्तन, मन में प्रभु प्रेम भर देना और मन को निर्विकारी, प्रभु प्रेम या मनमनाभव, ये तीन काम।

3. धन की तीन बांते

(i) सबसे पहला लोभ नहीं - लोभ एक बहुत बड़ी माया है। धन, पैसा, पैसा क्या-क्या कर देता है? लोभ आता है तो लोभ व्यक्ति को झूठ बोलने पर मजबूर करता है, लोभ आता है तो संग्रह वृत्ति जाग उठती है। सबसे पहला काम, जो पैसे मैं कमाऊं वो ऑनेस्टी (Honesty) वाले हो, ईमानदारी हो, किसी का शोषण न हुआ हो और परमात्म याद में कमाया हुआ तो ये अखूट भण्डार होगा।

(ii) दूसरा धन का मैनेजमेंट (Management) - मनी मैनेजमेंट (Money Management) सीखना है। कहां, क्या लगाना? कितना लगाना? व्यर्थ नहीं जाने देना, इकोनॉमी (Economy) और

(iii) तीसरा ईश्वरीय सेवा में लगाना

ये तीन काम धन के है। एक अभ्यास किया जा सकता है। जितने पैसे जिसके पास हो, या संपत्ति, वैल्यूबल्स (Valuables) आंखों के सामने उसको रोज देखो और पूछो कि आज ये है, कल नहीं रहेगी तो मेरी स्थिति कैसी रहेगी? जो कुछ वैल्यूबल्स (Valuables) है, वो मोबाइल भी हो सकता है, कुछ भी धन, बैंक अकाउंट, आज है, कल कुछ भी नहीं है तो मेरी स्थिति कैसी रहेगी? क्या मेरी धन में आसक्ति है? हो सकता है एक धनवान व्यक्ति, उसकी कोई आसक्ति नहीं और एक गरीब है, उसकी बहुत ज्यादा आसक्ति है। प्रश्न होने व न होने का नहीं है, प्रश्न मन के चित्त की वृत्ति का है। जो अत्यंत गरीब है, हो सकता है बहुत ज्यादा कंजूस है, लालची है। धन बहुत बड़ा प्रलोभन है, पांच विकारों में से एक है लोभ। लोभ क्या-क्या करता है इसकी चर्चा बहुत कम है, हमारी ज्यादा चर्चा किस पर रहती है? काम, क्रोध, मोह, अहंकार पर। लोभ भी कुछ कम नहीं है, सारा विस्तार ही लोभ का है। लोभ की जो वस्तुयें नहीं मिली तो क्रोध जागता है, सब आ जाते है, वैसे तो सब जुड़े हुये है। धन।

4. सम्बन्ध में तीन बातें

(i) सबसे पहला सम्बन्धों में निर्विकारिता - अपने सम्बन्धों को निर्विकारी करते जाना है, विकार का अंश न हो हमारे सम्बन्ध में।

दिखाया है एक किसान और उसका बेटा 20-25 वर्ष का, रोज खेत पर जाते हैं, दोपहर में पत्नी आती है भोजन लेकर। किसान एक बार खेती कर रहा है, बेटा बैठा है झाड़ के पास। एक सर्प आ जाता है, काला नाग, बेटे को डस लेता है। पिता आकर देखते हैं, ओ! नाग ने डस लिया, अपना साफा निकालते हैं उसके ऊपर ढक देते और अपना काम करना चालू। कुछ लोग गांव की तरफ जा रहे होते हैं, उनको कहता है, आप गांव की तरफ जा रहे हो? वो कहता है, हां। वो कहता है, घर में बता देना एक व्यक्ति का भोजन कम लाना। वो कहता है, ठीक है। पत्नी आती है, देखती है, ये झाड़ के पास कौन है लेटा हुआ? पहुंचती है, ये तो कपड़ा उसके पति का, अच्छा ये बात है मतलब गया, फिर चटाई डालती है। पति आता है, दोनों भोजन करने लगते हैं। कोई चर्चा नहीं, कोई रोना धोना नहीं, कुछ नहीं। सामने एक मुंडेर पर व्यक्ति बैठा है, सब-कुछ देखा है उसने पहले से, आकर पूछता है, क्या ये आपका बेटा है? वो कहता है, हां। क्या आपको उससे प्यार नहीं? अरे, ऐसे कैसे प्यार नहीं, वो तो मेरा बहुत प्यारा बेटा था। तो आप रोते नहीं हो? वो कहता किसलिए रोऊं? संस्कृत का कोई श्लोक वो कहता है और फिर कहता है, ये जब आया था क्या हमारी परमीशन (Permission) से आया था? और ये गया तो जाते-जाते कोई टाटा, बाय-बाय (Bye-Bye) करके गया? आया था, चला गया और जिसको आना है वो जायेगा।

समता। ये है प्रैक्टिकल वैराग्य। संसार में कुछ भी हो रहा है, कुछ भी उसका कोई प्रभाव भीतर नहीं, ऐसा वैराग्य। पकड़ के नहीं रखना है, पकड़ लेते हैं पुरानी यादों को, व्यक्तियों को और फिर दुःखी होते रहते हैं। कैसा दुःख? जो आया उसको जाना है। अनित्य, प्रपंच है सारा, नश्वर खेल है सारा। अभी-अभी मुरली में वरदान था न शायद? गुड़ियों का खेल है, फौरन निर्णय कर लेना, परख कर फैसला कर लेना। बहुत पॉवरफुल आज की मुरली, रोना, धोना, रूसना, रूठना, इमोशनल गेम्स (Emotional Games) है सारे। इसलिए कहा इस इमोशन्स (Emotions) को भी साक्षी होकर देखो, यह इमोशन्स मैं नहीं हूं, यह विचार मैं नहीं हूं, यह स्मृतियां मैं नहीं हूं, यह इच्छायें भी मैं नहीं हूं। इच्छा आई चली जायेगी, पकड़ के नहीं रखना है, न ही उसके पीछे भागना है उसको पूरा करने के लिए। आ रहा है जा रहा है, आ रहा है जा रहा है, आ रहा है जा रहा है। तो सम्बन्ध में सबसे पहली बात सम्बन्धों को क्या कर देना? निर्विकार।

(ii) दूसरा, सारे सम्बन्ध एक से - जितना यहां सम्बन्धों का विस्तार होगा आत्मा आहत होगी और सम्बन्ध तीन प्रकार के हैं इस संसार में। एक आत्मिक, एक मानसिक और तीसरे शारीरिक। जिन लोगों

के साथ हमारी आत्मा जुड़ी हुई है वो स्टेबल (Stable) सम्बन्ध रहते हैं, लम्बे समय चलते हैं, उसमें रूसना, रूठना, मनाना ये सब नहीं होता है। बहुत डीप लेवल (Deep Level) की अंडरस्टैंडिंग (Understanding) होती है दो व्यक्तियों में, कोई बात भी नहीं कर रहा है, कुछ भी नहीं कर रहा है परन्तु अंडरस्टैंडिंग इतनी गहरी है कि कोई विचार नहीं, कोई संकल्प नहीं, कुछ भी नहीं। यह आत्मिक सम्बन्ध है, आत्मा-आत्मा को जान लिया है। दूसरे प्रकार के सम्बन्ध जो मन के तल पर है, उसमें सबसे ज्यादा डिस्टर्बेंस (Disturbance) है, एक रूठता है दूसरा मनाता है, कभी कोई अहंकारी हो जाता है, कभी कोई क्रोधी हो जाता है, वो उसको कुछ बोलता है, वो उसको कुछ बोलता है, झगड़ते ही रहते दिन-रात, प्यार भी करते झगड़ते भी रहते हैं, लव हेट रिलेशनशिप (Love Hate Relationship). प्यार भी करते और एक दूसरे को खरोचते भी हैं बुरी तरह, मन के जो सम्बन्ध होते हैं क्योंकि मन बहुत अस्थिर चीज है, शरीर स्थिर चीज है इसलिए पुराने जमाने में लोग कम बीमार पड़ते थे। सेम (Same) भोजन, सेम , सेम, फिक्स (Fix) रहता था। शरीर को जो दे दो उसको वो आदत पड जाती, वो बोर नहीं होता। पर मन को निरंतर नया चाहिए, इसके लिए यहां सबसे ज्यादा डिस्टर्बेंस (Disturbance) है, जो इमोशनल लेवल (Emotional Level) के रिलेशन्स (Relations) है। और तीसरे सम्बन्ध है बॉडी (Body) के तल के, शारीरिक तल के, फिजीकल कॉन्टैक्ट (Physical Contact) जहां पर है वो सम्बन्ध। जब दूर रहते हैं तो कोई डिस्टर्बेंस नहीं है पर जब समीप आते हैं तो डिस्टर्बेंस शुरू हो जाता है और भयंकर डिस्टर्बेंस होता है, भयंकर क्रेविंग (Craving) है उसमें, उत्तेजनायें हैं, बैचेनी है, प्रोमिसिस (Promises) है, ये करेंगे वो करेंगे। वो सच्चा प्यार है ही नहीं क्योंकि देह के तल पर एक्सिस्ट (Exist) हो रहा है, केवल शरीर के तल पर, परन्तु बातें ऊपर-ऊपर से मन के तल की, आत्मा के तल की चल रही है, परन्तु सम्बन्ध है केवल और केवल दैहिक, वो व्यक्ति दूर जाने के बाद उसकी कोई याद भी नहीं है। ये तीन सम्बन्ध हैं आत्मिक, मानसिक और दैहिक। हर पुरुष, हर स्त्री तीनों सम्बन्धों से गुजरते हैं कभी न कभी, किसी न किसी तल पर। तो दूसरा सारे सम्बन्ध एक से जोड़ने का अभ्यास, रस उससे लेना सारे सम्बन्धों का और संसार के जो सम्बन्ध हैं आज कहा न, काका, मामा किस-किस को दिल दे दिया और सबने क्या कर दिया तुम्हारे दिल को? तोड़ दिया। टूटा हुआ लेकर आये थे बाबा के पास, जोड़ों अब इसको। मैं जोड़ तो देता हूं, पर फिर-फिर तोड़ देते हो, इस परिवार में ही नये-नये सम्बन्ध क्रियेट (Create) करते हैं और दुःखी होते रहते हैं। सम्बन्धों की माया सबसे बड़ी माया है। जो अलिप्त रहता है, किसी में भी फंसा हुआ नहीं है, न किसी स्त्री में, न किसी पुरुष में, उसे किसी की याद नहीं है। एकांत में 6 घण्टा कमरे में है, कोई संकल्प नहीं है, किसी को फोन करूं, किसी को मैसेज करूं, किसी के साथ कुछ शेयर करूं, कोई

पिक्चर भेजूं, कोई कुछ बात करूं। और जैसे कोई एकांत में जाता है, ये सब अगर हो रहा है अर्थात् रिलेशनशिप (Relationship) गड़बड़ है और नष्टोमोहा की स्थिति ही नहीं है। दूसरा काम, सारे सम्बन्ध एक से जोड़ देना है। तीसरा क्या होगा, सम्बन्धों में? तीसरा क्या हो सकता है?

(iii) सम्बन्धों में मधुरता - सम्बन्धों में कटुता न हो, हमारे सम्बन्ध जितने डिटैच (Detach) होंगे तो ही सम्बन्धों में मधुरता होगी। जितनी अटैचमेंट होगी, उस अटैचमेंट में बहुत ज्यादा लेन-देन है, उस लेन-देन में बहुत ज्यादा एक्सपेक्टेडशन्स (Expectations) है और जहां ज्यादा Expectations है वहां पर उनका टूटना भी है। इसलिए सम्बन्धों में मधुरता अर्थात् ये नहीं किसी को पकड़ लो, चापलूसी करो, ये मधुरता नहीं। रियल (Real) मधुरता साक्षी भाव है, डिटैचमेंट (Detachment) है, स्नेह है। उसमें आत्मिक स्नेह है, उसमें अंदर से स्नेह है उस आत्मा के लिए। तो ये चार चीजें - तन, मन, धन और सम्बन्ध। ये अभी दे दो तो तुमको क्या? गैरंटी कितने जन्मों की? कई जन्मों की। आज भी कहा न कि निःस्वार्थ प्रेम सम्बन्धों में, ये तुमको मिलेगा।

अब दो प्रकार के सौदागर है यहां पर, कौन-कौन से? सब को देने वाला एक, सबने एक समान लिया, चाहे एक मास का हो या पचास मास का हो, पचास साल वाला हो, चाहे फर्स्ट स्टूडेंट हो, चाहे फर्स्ट नम्बर हो या लास्ट नम्बर हो, सबको समान दिया गया, फिर भी नम्बरवार क्यों? इसका उत्तर है मुरली में, सबको सर्व शक्तियां दी, मास्टर सर्वशक्तिवान, त्रिकालदर्शी बनाया गया, फिर भी नम्बरवार क्यों? ज्ञान, गुण, शक्तियां सबको एक जैसा, ऐसा नहीं किसी को कम गुणमूर्ति, कोई ज्यादा गुणमूर्ति, ऐसा कुछ नहीं, सबको समान दिया गया, किस आधार पर नम्बर बने? दो, एक है वर्णन करने वाले और दूसरे है मनन करना। दोनों में क्या अंतर है? एक है चिन्तन, सोचना। चिन्तन जब गहरा हो जाये तो मनन, मनन जब गहरा हो जाये तो मगन। ये तीन अवस्थायें है, एक है सोचना हल्का-फुल्का, एक है उसका अनुभव करना। हमें याद है, बहुत पहले जब हम एमबीबीएस (MBBS) में थे और एक मेडिसिन (Medicine) की किताब में चेप्टर (Chapter) था - मायोकार्डियल इनफार्क्शन (Myocardial Infarction) अर्थात् हार्ट अटैक (Heart Attack), 30 Pages थे। इतने बारीक-बारीक और इतना बड़ा चेप्टर, उस समय हमने एक विचार किया था, संकल्प कि जिस व्यक्ति ने यह लिखा है उस व्यक्ति की चेतना के साथ मुझे जुड़ जाना है। उसकी तो इतनी भारी भाषा है, वो भाषा भी तो समझ में नहीं आ रही थी। पर क्या ऐसा हो सकता है कि मैं उसके साथ अगर जुड़ गया तो ये उसने जो कुछ भी लिखा है, मुझे वैसे ही समझ में आ जायेगा? तो ये अभ्यास करना है। ये जो मुरली है, बाबा ने कहा मुरली मनन कैसे करना वह बाद में बतायेंगे। ये मुरली है 10 दिसम्बर की, वो

बराबर एक मास के बाद में बाबा ने दूसरी मुरली चलाई 10 जनवरी 1988 की - मनन करने की विधि, बाबा भूले नहीं। कहा न इसमें, बतायेंगे महत्व, बराबर एक मास के बाद की मुरली है। ये दिसम्बर की है, वो जनवरी की है। उसमें बताई है बहुत सारी बातें, मनन कैसे करो? उस चेतना से जुड़ जाना, जिसने जो ये मुरली चली है कब चली है? ओम शान्ति भवन में चली है, कब चली है? 1987 में चली है। टाइम ट्रेवल (Time Travel), उस कालखण्ड में पहुंच जाना। जैसे मैं वहां बैठा हूं और ये चल रही है और जो स्पीकर) की चेतना जहां पर है उसी चेतना से मैं जुड़ गया हूं, अब मुझे वो समझ में आ रहा है, शब्द नहीं दिखाई दे रहे, भाव दिखाई दे रहे है, गूढ़ार्थ दिखाई दे रहा है, उसके पीछे जो कुछ छिपा है, उस समय का समाज कैसा था तब ये चलाई गयी है। पैनीट्रेटिंग आइस (Penetrating Eyes), चीरकर दृष्टि अंदर घुस रही है, वो रत्न वहां से निकाल रही है जो अदरवाईस (Otherwise) नहीं मैं देख सकता, असंभव है जो देखना। तो मनन और वर्णन, वर्णन करने वाले अनुभव नहीं करा सकते। वर्णन करने वाले क्या करेंगे? जैसे कोई खजाना या तो बैंक में या तकिया के नीचे या अलमारी में। यूज नहीं करते, ज्ञान है पर यूज नहीं करते, शक्ति है परन्तु सफलता नहीं, गुण है परन्तु यूज नहीं करते, ऐसा है उनका। चूंकि केवल वर्णन कर रहे है, एक जमात है तोतों की जैसे रटन कर रहे है, बस। ये मुरली है, पढ़ लिया, सुना लिया, सुन लिया, हो गया। दो प्रकार के लोग होते ऑडियंस - एक पल्ला झाड़ और दूसरे पल्ला पकड़। मुरली क्लास हुई पल्ला झाड़ और निकल। एक होते पल्ला पकड़, जो पकड़ लेते है कुछ-कुछ बातों को। ऐसा पकड़ लेते है कि प्रोग्रामिंग (Programming) चालू हो जाती है अंदर डीप विद इन (Deep Within). ये क्या कह दिया, तुम्हारा हर कर्म कला हो जाये, कितनी गहरी बात बोल दी? तो हर चीज कला होगी, नहाना कला हो गई, खाना कला हो गई, चलना कला हो गई, बोलना कला हो गई, हर चीज कला बन जाये। बोला न वरदान में, पकड़ लेना है। प्वाइंटस को नहीं, भाव को और उसको प्लान्ट (Plant) करना, जैसे बीज उठाया और अवचेतन मन में उसे गहराई में दोहरा रहे है, विज्युअलाइज (Visualize) कर रहे, हिप्नोसिस (Hypnosis), विज्युअलाइजेशन (Visualization), सेल्फ सजेशनस (Self Suggestions). एकांत का बहुत बड़ा काम है मुरली समझने में, तोता रटन तो बहुत आसानी से किया जा सकता है। मुरली 10 बार पढ़ो, पूरा रट लो, आओ और सुनाओ ए-टू-जेड (A To Z), काम पूरा हुआ। न सुनाने वाले को कोई अनुभव, न सुनने वालों को कोई अनुभव। वाह, वाह, वाह। गहराई में पहुंचना है, डीप (Deep) जाना है हर चीज के, एक-एक बात के और उसे अपने जीवन में अप्लाई (Apply) करना है। विधि है- खजानों को कार्य में लगाना, समय पर कार्य में लगाना, ये विधि बताई है आज की मुरली में। तो केवल वर्णन करने वाले नहीं, केवल रिपीट करने वाले नहीं, क्या

करने वाले? रिपीट करने वाले, अनुभव करने वाले, खजाना खुद यूज करने वाले, दूसरों को देने वाले, बांटने वाले, ये काम करना है।

एक व्यक्ति जा रहा है, देखता है गॉडली सुपर मार्केट (Godly Super Market), वो कहता है गॉडली सुपर मार्केट (Godly Super Market) ये क्या होता है? अंदर घुसता है, देवदूत बैठे हुए है, सुपर मार्केट (Super Market) सुपर बाजार है, वो कहता है स्वागत है। अपने आप दरवाजे खुलने लगते है। वो कहता है ये क्या! आश्चर्य होता है ऐसा कभी देखा नहीं। देवदूत कहता है, आओ-आओ, जो चाहिए वो ले लो, ये लो बॉस्केट (Basket). अंदर घुसता है, साहस! बकेट (Bucket) भर लेता है, आगे, शक्ति! बहुत काम की चीज उसको भर लेता है। धैर्य! धैर्य के दो पैकेट ले लेता है। पवित्रता! इसको कैसे छोड़ू? पवित्रता तो बहुत काम की चीज है, पवित्रता के दो बॉक्स (Boxes) ले लेता है और आगे जाता है। विश्वास! बहुत जरूरी है। मुक्ति! मुक्ति के लिये तो सब कुछ है, दो पॉलिथीन (Polythene) तो मुक्ति से भर लेता है। फिर आगे जाता है, सोचता है, अब क्या लूं? प्रार्थना! वो भी बहुत जरूरी है, अगर कोई भूल चूक हो जाये तो प्रार्थना कर लो भगवान से। सारा सामान लेकर आता है, काउंटर पर देवदूत बैठा है। कहता है, कितना बिल हुआ? देवदूत कहता है, यहां के बिल चुकाने का सिस्टम भी ईश्वरीय ही है। वो कहता है, क्या है? यहां से जाओ और जो कुछ तुमको मिला है ये सब बांटते रहो, बस यही बिल चुकाने की विधि है इस दुकान की। यह ईश्वरीय दुकान है, साधारण दुकान नहीं है। जितना तुम बांटोगे, इसलिए तो लोग कम आते है। ये दुकान है सत्संग की, यह दुकान है ईश्वरीय यज्ञ। यहां का बिल चुकाना है तो जो कुछ मिला है इस यज्ञ से, जाओ और बांटो। दे दो सबको, तुम्हारा बढ़ जायेगा, बिल चुक्त् हो जायेगा, अपने आप।

लास्ट बात मुरली की, तुम कौन हो? ज्ञानसूर्य हो। अंधकार मिटाना है, तुम स्वयं अंधकार में नहीं रह सकते, कोई भी विकार का अंधकार तुम्हारे अंदर नहीं, कोई दुःख का अंधकार, कोई आंसू अंदर छिपा बैठा है, तुम्हारे अंदर नहीं हो सकता। तुम्हें तो सूर्य बनकर जगत को प्रकाशित करना है, अंधकार को मिटाना है। परमार्थ से व्यवहार और? और क्या? व्यवहार और परिवार को सार्थक करना है। बड़े काम है तुम्हारे। चेक (Check) करो और चेंज (Change) करो।

ऐसे बेफिक्र बादशाहों को, ऐसे ईश्वरीय सौदा करने वाले बच्चों को, सौदागर बच्चों को, ऐसे हर कर्म को कला के रूप में उजागर करने वाले बच्चों को, ऐसे पॉवरफुल आत्माओं को, ऐसे मनन करने वाली आत्माओं को, ऐसे अनुभवी आत्माओं को, ऐसी धन लक्ष्मी यों को, ऐसी कुमारियों को, ऐसी कन्याओं को, ऐसी माताओं को, ऐसे भोली-भोली सुरतियों को, ऐसे पाण्डवों को, ऐसे डबल विदेशियों को, ऐसे नेपाल

वालों को, ऐसे ईस्टर्न वालों को, ऐसे बुद्धिमान आत्माओं को, ऐसे दाता बनने वाली आत्माओं को, अनुभवी आत्माओं को, ऐसे समझदार आत्माओं को, ऐसे अति गरीब आत्माओं को, ऐसे जो संसार जिसे नाउम्मीदवार और असंभव समझता है ऐसी आत्माओं को, ऐसी साधारण आत्माओं को, ऐसे बैगर टू प्रिंस (Beggar to Prince) आत्माओं को, ऐसे फौरन निर्णय करने वाली आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और गुडनाईट और नमस्ते। हम रूहानी बच्चों की रूहानी बापदादा को याद-प्यार, गुडनाईट और नमस्ते।

ओम शान्ति